IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक परिवेश में रामायण के नारी पात्रों की भूमिका

डॉ. प्रीति श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ़ संस्कृत, एस. एन. डी. टी. कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड एस. सी. बी. कॉलेज ऑफ़ कामर्स एंड साइंस फॉर वीमेन, चर्चगेट, मुंबई- 400020

शोध-सारांश –

लौकिक संस्कृत-साहित्य की परम्परा में आदिकवि महर्षि वाल्मीकि विरचित रामायण महाकाव्य न केवल आदिकाव्य अपितु आर्ष एवं उपजीव काव्य के रूप में विश्व-विख्यात है। यह भारतीय वांग्मय की वह अनमोल धरोहर है, जिसमें भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का मूल निहित है तथा जिसमें मानव-जीवन का सर्वोच्च आदर्श प्रस्तुत किया गया है। महर्षि वाल्मीकि ने इस महनीय ग्रंथ में नारी पात्रों की वह आदर्श चरित्र-गाथा वर्णित की है, जिनका समत्व मिलना अन्यत्र दुर्लभ है। वस्तुतः नारी ही वह मुख्य आधार है, जिस पर समाज और संस्कृति की अवधारणा टिकी हुई है। रामायण में नारी पात्रों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है तथा उसे उच्च एवं श्रेष्ठ स्थान दिया गया है। इस महाकाव्य में राम एवं रावण दोनों पक्षों के प्रमुख स्त्री-पात्रों में सीता, कैकेयी, कौशल्या, सुमित्रा, अहिल्या, उर्मिला, अनसूइया, शबरी, **मन्दोदरी**, त्रिजटा, तारा, शूर्पणखा, लंकिनी और मंथरा परिगणित हैं। इन सभी स्त्रियों का रामायण में अपना-अपना विशिष्ट महत्त्व है तथा विभिन्न दृष्टिकोणों से इनका चरित्र भी उजागर किया गया है। रामायण-काल में चित्रित स्त्रियां सुशिक्षित, विचारसंपन्ना एवं कर्तव्यपरायणा हैं। इन स्त्रियों में पातिव्रत्य, धर्मपरायणता, राजनीतिज्ञता, सहिष्णुता, त्याग एवं स्वाभिमान जैसे कतिपय ऐसे महान गुण हैं, जो हमारे समाज के नारियों लिए अत्यंत आवश्यक, उपादेय एवं सर्वजन-ग्राह्य है।

जब हम आधुनिक परिवेश पर दृष्टिपात करते हैं तो यह पाते हैं कि हमारी जीवन-दृष्टि भौतिकवादी और पदार्थवादी रंग में डूब चुकी है। त्याग, सहिष्णुता, विनम्रता जैसे श्रेष्ठ गुण हमारे जीवन से विलुप्त हो गए हैं। ऐसे कठिन समय में रामायण के समस्त नारी-पात्र जो कि त्याग की प्रतिमूर्तियां हैं, उनका पथ-प्रदर्शन निसंदेह अनुकरणीय है। वर्तमान युग में रामायण जैसे आदर्श महाकाव्य के विचारों, संस्कारों को अपने व्यवहार में लाना बहुत ही आवश्यक हो गया है। इस ग्रंथ में निहित चारित्रिक-आदर्शों को जब हम अपने चरित्र में उतारेंगे, तभी हमारा समाज, हमारा राष्ट्र सुरक्षित हो सकेगा और उसका पुनरुत्थान सम्भव हो सकेगा।

शब्द संकेत – वाल्मीकीय रामायण, स्त्री-पात्र, रामायणकालीन नारी, भारतीय-संस्कृति, नारी-चरित्र, नारी-चेतना, सीता।

प्रस्तावना –

आज के प्रगतिशील और विकासवादी युग में जब हम भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की बात करते हैं तो प्रश्न उठता है कि प्राचीन काल से लेकर अब तक के दीर्घ समयांतराल में भारतीय संस्कृति की क्या अवधारणा रही है? क्या यह जीवंत है? विकास की इस अजस्र धारा में इसका क्या स्वरूप रहा है? समरूप है अथवा यह परिवर्तित हो रही है? यह तो सर्वविदित है कि भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और सुसमृद्ध संस्कृति है । इसकी पृष्ठभूमि में मानव कल्याण की भावना निहित है । यहां के समस्त कार्यकलाप **'बहुजन हिताय'** तथा **'बहुजन सुखाय'** की दृष्टि से किए जाते हैं । **'वसुधैव कुटुंबकम्'** के पावन उद्देश्य पर अवलंबित यह भारत की आदर्श संस्कृति है । परंतु आधुनिकता की अन्धी दौड़ एवं पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभाव से वर्तमान समाज में बदलाव हो रहे हैं । यह हमारी संस्कृति के रक्षण हेतु कितनी उपकारी है, यह विचारणीय है । यह सत्य है कि परिवर्तन संसार का नियम है, किंतु परिवर्तन सकारात्मक, यथोचित एवं स्वस्थ समाज की संरचना हेतु कल्याणकारी होनी चाहिए । क्योंकि किसी भी पहलू के दो रूप होते हैं सकारात्मक तथा नकारात्मक । सकारात्मक दृष्टि से विचार और व्यवहार करना प्रगति की ओर उन्मुख होना है, वहीं नकारात्मक मार्ग हमें पतन की ओर अग्रसर करता है और हम अधोमुखी हो विनाश का कारण बनते हैं । अतः सत्योचित मार्ग का वरण ही श्रेयस्कर है, जिससे हमारे समाज, संस्कृति, नैतिकता, जीवन-मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन हो सके । इस संदर्भ में रामायण महाकाव्य, जो भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि ग्रंथ एवं विश्वकोष के रूप में विश्व विख्यात है, यह मानव जीवन के अनेकों मूल्यवान तत्त्वों, तथ्यों तथा सिद्धांतों का अनुपम ग्रंथ है । मानव जीवन के सभी पक्षों का दिग्दर्शन इस ग्रंथ में प्राप्त होता है तथा इसमें आदर्श मानव का चित्रण बड़े ही सहजता और सुरम्यता से किया गया है । यहां जीवन का लक्ष्य अर्थ और काम से बढ़कर धर्म को बताया गया है । अतः रामायण भारतीय संस्कृति की प्रतीकात्मक ग्रंथ के रूप में अनमोल ज्ञान-भण्डार है ।

रामायण में विवेचित नारी-पात्र –

सामान्यतः किसी भी समाज की प्रगति का आकलन उस समाज के स्त्रियों की पद-मर्यादा द्वारा की जाती है । क्योंकि स्त्रियां ही प्रत्येक समाज की आधारशिला, मुख्य केंद्रबिंदु तथा संस्कृति की स्रोत मानी जाती हैं । भारतीय संस्कृति में सदैव से ही स्त्रियों की अपनी एक मर्यादा और महत्वपूर्ण भूमिका रही है । वह अर्धांगिनी और मातृत्व गुणों से युक्त सर्वदा सम्माननीय है तथा शक्ति, धन एवं ज्ञान की प्रतीक मानी जाती है । किंतु व्यावहारिक रूप में युग परिवर्तन के साथ-साथ उसके आदर्शों और कर्तव्यों में भी परिवर्तन होता रहा है । क्योंकि देश, काल, परिवेश और आवश्यकताओं का व्यक्ति के जीवन के साथ गहरा संबंध होता है और इसका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के सामाजिक जीवन पर अवश्य ही पड़ता है । रामायणकालीन स्त्रियों के चरित्र हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं । इसमें वर्णित सभी नारी-पात्र चाहे वह मानव हो अथवा दानव, उनका चरित्र कुछ अपवादों को छोड़कर सदा ही स्तुत्य एवं अनुकरणीय है ।

वस्तुतः रामायण-कथा को आदर्श के उच्चतम शिखर पर मण्डित करने में नारी-पात्रों की विशेष भूमिका रही है । इस महनीय ग्रंथ के प्रमुख स्त्री-पात्रों में सीता, कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा, मंथरा, उर्मिला, मन्दोदरी, शबरी, अहिल्या, शूर्पणखा आदि अनेक पात्र चित्रित किए गए हैं । महर्षि वाल्मीकि ने इन सभी पात्रों का बड़े ही भव्य रुप में चित्रण करते हुए आदर्श मानव का सुव्यवस्थित रूप प्रस्तुत किया है, जो भारतीय संस्कृति को सशक्त और सुदृढ़ बनाने में सहायक है ।

सीता –

वाल्मीकि रामायण में सीता की आद्योपांत मुख्य भूमिका होने से वह केंद्रीय चरित्र के रूप में वर्णित हैं । सीता की निष्ठा पतिव्रत-धर्म पालन पर ही केंद्रित थी । वह किसी भी परिस्थिति में उससे विचलित नहीं हुईं और मन-वचन-कर्म से उसका अनुसरण करती रहीं । पतिपरायणा सीता पति की पादच्छाया हेतु अयोध्या के समस्त भौतिक सुखों का परित्याग कर वनवास के कष्टमय जीवन को अङ्गीकार करती हैं । वह श्रीराम के बहुविध समझाने पर भी उनके साथ वन गमन के आग्रह से विरत नहीं होती, अपितु तर्कयुक्त वचन कहती हैं कि - 'वन में दोष तथा दु:ख तो हैं ही, किंतु मेरी हस्तरेखा में वनवास निश्चित ही है । कौमार्य अवस्था में पिता के घर आए ब्राह्मणों ने मेरा जो भविष्य कथन किया है, उसमें मेरे लिए वनवास निश्चित है, ऐसा कहा था । एक अन्य भिक्षुकी ने भी मेरी माता से मेरे कथित वनवास के विषय में भविष्यवाणी की थी ।'[1] सीता के बहुत अधिक आग्रह करने पर भी जब श्रीराम उन्हें अपने साथ वन में ले जाना स्वीकार नहीं करते, तब वे उनके पुरुष कलेवर में स्त्री अङ्ग होने की बात कह डालती हैं –

किं त्वामन्यत वैदेहः पिता मे मिथिलाधिपः । राम जामातारं प्राप्य स्त्रिय पुरुषविग्रहम् । ।

-(वाल्मीकि रामायण, 2/30/3)

पति की प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए स्वाभिमानी सीता पृथ्वी के उर में समाकर त्याग की पराकाष्ठा को चरितार्थ करती हैं । भद्र से लोकापवाद की चर्चा सुनकर लोकनिंदा के भय से राम द्वारा निष्कासित किए जाने पर वे राम के इस अन्याय के प्रति यह कहकर असंतोष व्यक्त करती हैं कि ऋषियों द्वारा पूछे जाने पर मैं अपने निर्वासन का क्या कारण बताऊंगी –

किंनु वक्ष्यामि मुनिषु कर्म चासत्कृत प्रभो । कस्मिन् वा कारणे त्यक्तिका राघवेण महात्मना ।।

-(वाल्मीकि रामायण, 7/48/7)

अंत में सीता अपनी चरित्र की पवित्रता प्रमाणित करने हेतु पृथ्वी माता का वंदन कर उसकी गोद में सर्वदा के लिए समा जाती हैं । वे अग्नि के समान शुद्ध होकर भी समस्त लांछनों और कलंकों को सहकर राम को यशस्वी बनाने में अपना कर्तव्य निभाती हैं । सीता कहीं भी अपने उदार हृदय एवं सहिष्णु चरित्र का परित्याग नहीं करती, अपितु इसे लोकोत्तर त्याग कहकर शिरोधार्य करती हैं । इसप्रकार सीता का समुचित जीवन आदर्श-चरित्र का वह दृष्टांत है, जिसमें पतिव्रता, आचारनिष्ठा, त्याग, सहिष्णुता, विनम्रता और स्वाभिमान जैसे गुण समाहित हैं । सीता का व्यक्तित्व नारी समाज के लिए सदैव अनुकरणीय, वंदनीय तथा युगों युगों तक प्रेरणादायी रहेगा ।

कैकेयी –

महाराज दशरथ की तीन रानियों में कैकेयी की भूमिका ऐसी है, जिसने महाकाव्य को गति प्रदान की तथा रामकथा की मूल कारण बनने के साथ-साथ राम को मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पद पर आसीन होने में सहायक बनीं । संभवत: यही कारण है कि राम ने माताओं में सर्वप्रथम कैकेयी को ही प्रणाम किया है । महर्षि वाल्मीकि ने कैकेयी का जो चित्रण किया है वह तीन आयामों में समझा जा सकता है । सर्वप्रथम कैकेयी का वह उत्कृष्ट रूप जो देवासुर संग्राम में राजा दशरथ की प्राण रक्षा तथा राम के प्रति वात्सल्य प्रकाशन में दिखाई देता है । मंथरा द्वारा राम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर प्रसन्नचित्त कैकेयी मंथरा को उपहार देते हुए कहती हैं कि - 'हे मंथरा! राम के राज्याभिषेक के समाचार से अधिक प्रिय तथा अमृत के समान अन्य दूसरा मधुर वचन हो ही नहीं सकता ।'

न मे परं किञ्चिदितस्त्वयापुनः, प्रियं प्रियार्हे सुवचं वचो वरम् ।

तथा ह्यवोचस्त्वमतः प्रियोत्तरं, परं वरं ते प्रददामि तं वृणु ।।

-(वाल्मीकि रामायण, 2/7/36)

मंथरा द्वारा **'सानुबन्धा हता ह्यसि'**[2] कहने अर्थात् अनुबंध का स्मरण कराने पर भी कैकेयी ने राम के राज्याभिषेक पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मंथरा की भर्त्सना की है ।

भ्रात्रिन्भृत्यांश्च दीर्घायुः पितृवत्पालयिष्यति । संतप्यसे कथं कुब्जे श्रुत्वा रामाभिषेचनम् ।।

-(वाल्मीकि रामायण, 2/8/15)

सा त्वमभुदये प्राप्ते वर्तमाने च मन्थरे । भविष्यति च कल्याणे किमर्थं परितप्यसे ।।

-(वाल्मीकि रामायण, 2/8/17)

इसके विपरीत कैकेयी का अवांछनीय रूप भी प्रकट हुआ है, जो उनके चरित्र को कालिमा से भर देता है तथा वे जनमानस में युगों तक के लिए घृणा, रोष और अपयश का कारण बन जाती हैं । भरत को राज्य एवं राम को 14 वर्ष का वनवास - इस प्रसंग के द्वारा वाल्मीकि ने कैकेयी के सत्ताकांक्षायुक्त निष्ठुर, घातकी तथा निकृष्ट स्वरूप को उजागर किया है । यद्यपि कैकेयी अनिंद्य सुंदरी, गुणवती, युद्धकला में निपुण, तीक्ष्ण-बुद्धिवाली होने के साथ-साथ एक वीरांगना भी थीं । राम से उनका कोई विरोध नहीं था । राम उन्हें उतने ही प्रिय थे, जितने कि भरत ।[3] किंतु मंथरा ने कैकेयी के मन में नारी स्वभावगत सौतिया-डाह को उत्पन्न कर दिया था, जिसके कारण राम के राजगद्दी पर बैठने से कैकेयी की अवहेलना की आशंका उत्पन्न हो जाती है ।[4] तत्क्षण कैकेयी का वात्सल्य अहं-चेतना के समक्ष कुंठित हो जाता है । अतः कौशल्या को राजमाता के रूप में देखना, उनके महत्व के समक्ष अपनी लघुता को सहन कर पाना दुष्कर हो जाता है । कौशल्या के प्रति उनके दुर्व्यवहार का कारण भी संभवतः यही है ।

दर्पान्निराकृता पूर्वं त्वया सौभाग्यवत्तया । राममाता सपत्नी ते कथं वैरं ण यातयेत् ।।

-(वाल्मीकि रामायण, 2/8/37)

इसके अतिरिक्त वचनबद्ध दशरथ को सत्य का पालन करने के लिए बाधित करने के पीछे कैकेयी की शायद यही कामना होगी कि इक्ष्वाकुवंश पर सत्य से विचलित होने का कलंक न लग जाए ।[5] उपर्युक्त दोनों पक्षों के माध्यम से महाकवि ने भावी पीढ़ी को यह संकेत दिया है कि हमारे अंतर में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तत्व विद्यमान रहते हैं, उनमें संतुलन बनाए रखना तथा सजग रहना अति आवश्यक है ।

इसके पश्चात् कैकेयी का तीसरा पक्ष वर्णित है, जिसमें कैकेयी के कारुणिक एवं दयनीय रूप के दर्शन होते हैं । भरत भारद्वाज ऋषि के आश्रम में माता कैकेयी का परिचय देते हुए कहते हैं कि - 'यह क्रोधी स्वभाव वाली, अशिक्षित बुद्धिवाली, गर्विष्ठ, स्वयं को सर्वाधिक सुंदर और सौभाग्यशाली समझने वाली, राज्यलोभी, देखने में आर्य परंतु संस्कार में पूर्णतः अनार्य, मेरी माता कैकेयी है ।' भरत द्वारा कहे गए ऐसे तिरस्कार पूर्ण, कटुवचन किसी भी माता के लिए असहनीय है ।

क्रोधनामकृतप्रज्ञां दृप्तां सुभगमानिनीम् । ऐश्वर्यकामां कैकेयीमनार्यामार्यरूपिणीम् ।।

ममैतां मातरं विद्धि नृशसां पापनिश्चयाम् । यतोमूलं हि पश्यामि व्यसनं महादात्मनः ।।

-(वाल्मीकि रामायण, 2/92/26-27)

वस्तुतः कैकेयी का चरित्र इतना गंभीर है कि उसके स्वभावगत गुण-दोषों का आकलन इतनी सहजता से नहीं किया जा सकता । किंतु इस घटना-चक्र से हमें यह सीख लेनी चाहिए कि मानव मन अति चंचल है, अतः अपने चित्त को सदैव जाग्रत और सतर्क रखना चाहिए । क्योंकि अमर्यादित आकांक्षा गुणवान व्यक्ति को भी पतन की ओर ले खींच लेता है ।

मन्थरा –

वाल्मीकि रामायण में मन्थरा का चरित्र जहां एक ओर धूर्त, निंद्य, कुब्जा दासी के रूप में चित्रित है, वहीं वह स्वामिभक्त, कर्तव्य-परायण एवं कुशल राजनीतिज्ञ भी है । इस महाकाव्य में कवि ने दासी-वर्ग की मनोवृत्ति को बड़े ही सूक्ष्म दृष्टि से वर्णित किया है । कैकेयी के विवाह के समय मंथरा उसके साथ आई थी, जिसके कारण उसने कैकेयी के साथ तादात्म्य स्थापित कर एक अंतरंगता और विश्वास का अटूट संबंध बना लिया था । राम के राज्याभिषेक द्वारा आसन्न संकट का भान होने पर उसे अपने प्रभावहीनता की आशंका हुई । अतः स्वार्थपरक विचारों से प्रेरित मंथरा ने कैकेयी के समक्ष रामराज्य में संभावित उत्पीड़न का वह भयावह दृश्य उपस्थित किया कि कैकेयी की तटस्थता भी नकारात्मक दिशा में प्रवाहित होने लगी ।

अद्य राममितः क्षिप्रं वनं प्रस्थापयाम्यहम् । यौवराज्ये च भरतं क्षिप्रमेवाभिषेचये ।।

-(वाल्मीकि रामायण, 2/9/2)

मंथरा ने सपत्नी-पुत्र के व्यवहार का जो चित्र उपस्थित किया, वह निश्चय ही राजनीति की निपुणता का परिचायक है । मंथरा कैकेयी की हितैषिणी है, इसलिए उसके मन में कैकेयी के प्रति वात्सल्यभाव भी है । इसी वात्सल्यता के कारण कैकेयी के साथ तादात्म्य की अनुभूति होने पर उसे अपने भविष्य की चिंता ने आशंकित कर दिया । वस्तुत: कैकेयी को उत्तेजित करने का मूल कारण भी यही है, जो भविष्य की आशंका से व्याप्त है । राम के 14 वर्ष के वनवास से अर्थात् राम की अनुपस्थिति में अयोध्या की प्रजा पर भरत का स्नेहपूर्ण आधिपत्य तथा राम की लोकप्रियता को विस्मृत करने की दूरदृष्टि मंथरा की ही थी ।

चतुर्दश हि वर्षाणि रामे प्रव्राजिते वनम् । प्रजाभावगतस्नेहः स्थिरः पुत्रो भविष्यति ।।

-(वाल्मीकि रामायण, 2/9/21)

इसप्रकार मंथरा-चरित्र के माध्यम से महाकवि ने यहां स्वामी के प्रति कर्तव्यनिष्ठा, वात्सल्य-प्रेम, हितैषिता तथा तादात्मयता आदि गुणों को प्रतिष्ठित किया है । यद्यपि मंथरा जनमानस में सदैव से ही घृणित एवं निंदनीय पात्र के रूप में चर्चित रही हैं, किंतु विचार करें तो रामकथा का मुख्याधार यही है । दूसरा मंथरा ने जो भी दुष्कृत्य किए वह एक दासी के पक्ष में शायद अनुकूल ही हैं । अतः मंथरा का आकलन यदि दास-दृष्टि से किया जाए तो शायद उसे भली-भांति समझा जा सकेगा ।

उर्मिला –

भारतीय वाङ्गमय में लक्ष्मण-भार्या उर्मिला का चरित्र सदैव उपेक्षित ही रहा है। वाल्मीकि रामायण में उर्मिला को मूक-पात्र तथा साधारण रूप में चित्रित किया गया है। जबकि उनका जीवन त्याग और करुणा की दारुण वेदना से परिपूर्ण था। वह पतिव्रत धर्म की प्रतीक एवं सीता तुल्य ही हैं। किंतु साहित्यकारों ने उर्मिला के त्याग, प्रेम, भक्ति और निःस्वार्थ सेवा को कम महत्त्व और कम आंका है। यह सर्वविदित और सत्य है कि उर्मिला के महान चरित्र, अखंड पतिव्रत, स्नेह और महान त्याग की भावना को रामायण में वह स्थान नहीं मिल सका, जो वस्तुतः मिलना चाहिए था। महान लेखक रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने सर्वप्रथम इस ओर संकेत किया और इसके पश्चात् महावीर प्रसाद द्विवेदी जी से प्रेरित होकर मैथिली शरण गुप्त जी ने 'साकेत' के नवम एवं दशम सर्ग में उर्मिला के चरित्र को प्रधान नायिका के रूप में चित्रित किया है। संस्कृत काव्यकार पण्डित नारायण शुक्ल जी ने भी इसी आधार पर अद्यावधि चिर उपेक्षिता उर्मिला को अपने महाकाव्य में प्रधान नायिका के पद पर प्रतिष्ठित कर सत्रह सर्गों में 'उर्मिलीयं महाकाव्य' की रचना की है। उर्मिला आदर्शमयी और मर्यादाशील विरहिणी है। उनकी विरह वेदना अपरंपार है। राम के साथ लक्ष्मण के वन गमन पर उर्मिला चौदह वर्ष तक अपने प्रिय के वियोग-व्यथा की पीड़ा को निःशब्द सहती रहीं। उनके त्याग और समर्पण की गाथा पर तो एक स्वतन्त्र काव्य का नव-निर्माण हो सकता था। किंतु काव्य-परंपरा से यह अछूता रहा, और साहित्य जगत् में उर्मिला को वह श्रेष्ठ स्थान न प्राप्त हो सका, जो कि आवश्यक एवं अपेक्षित है। कुछ आलोचकों का मंतव्य है कि उर्मिला द्वारा किया गया त्याग सीता से भी उत्कृष्ट है। क्योंकि सीता तो राम के साथ वन गई, किंतु उर्मिला ने तो चौदह वर्षों तक एक विरहिणी का जीवन व्यतीत किया। जो उनकी अवर्णित, अचर्चित और अघोषित महानता है। लक्ष्मण के वन प्रवास से उर्मिला उनके दर्शन तथा कुशल समाचार से भी वंचित हो गई थी। यदि सीता की भांति वह भी वन जाकर अपने पति की सेवा करती तो कुछ संतोष रहता। किंतु लक्ष्मण ने स्वयं ही वन जाने का निश्चय किया था। यदि उर्मिला साथ जाती तो संभवतः उसके स्वामी के कर्तव्य पालन में व्यवधान उत्पन्न होने की आशंका रहती। जिसके कारण धर्म में त्रुटि हो सकती थी। अतः पतिव्रता त्यागमयी उर्मिला ने चौदह वर्षों की असहनीय विरह-वेदना को अङ्गीकार कर पति को कर्त्तव्यपथ से च्युत नहीं होने दिया और अयोध्या में रहकर सुमित्रा और अन्य पारिवारिक जनों की सेवा की। धन्य है उर्मिला का व्यक्तित्व एवं चरित्र, जिसमें संपूर्ण भारतीय नारी की महिमा गौरवान्वित है। इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज के लिए उर्मिला का चरित्र अत्यंत अनुकरणीय, आदर्शशील एवं महानतम है।

मन्दोदरी –

रावण की पत्नी रानी **मन्दोदरी** एक ऐसी स्त्री हैं, जो पति-परायणा, स्वाभिमानी एवं कुशल राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ राजकाज की सहायिका भी थीं। वह यथा-समय रावण को नीति-युक्त ज्ञान तथा उस पर आचरण करने की सलाह देती रहीं। **मन्दोदरी** श्रीराम की शूरवीरता से भलीभांति परिचित थीं। उन्हें यह ज्ञात था कि अयोध्या में अवतारी पुरुष श्रीराम का जन्म हो चुका है। अतः समय की प्रतिकूलता जानकर ही **मन्दोदरी** सदैव रावण को अधर्म के मार्ग से विरत होने के लिए प्रोत्साहित करती रहीं। किंतु रावण के अहंकारी हठ के आगे वे असफल रहीं। **मन्दोदरी** की कर्तव्यनिष्ठा पूर्णतः रावण के कल्याण में निहित थी। वह लंकेश को सर्वदा सत्पथ पर चलने के लिए प्रेरित करती रहीं। उन्होंने दशानन के दुष्कृत्यों का सदैव विनम्रता पूर्वक विरोध किया। वे भलीप्रकार जानती थीं कि रावण ने सीता का हरण करके एक जघन्य अपराध एवं अधार्मिक कार्य किया है। इसलिए जब रावण ने सीता का हरण किया तो **मन्दोदरी** ने बड़ी विनम्रता एवं शिष्टतापूर्वक उसे सही दिशा की उन्मुख करते हुए यह कहा कि - 'हे नाथ, श्रीराम साधारण मनुष्य नहीं है। वह सर्वेश्वर, सर्वसमर्थ, सच्चिदानंद, साक्षात् परम-पुरुष हैं। उनका अनादर उचित नहीं है। वैदेही साक्षात् जगज्जननी, योगमाया हैं। यह बैर आपके लिए अहितकारी हो सकता है। अतः श्रीजनकनंदिनी को श्रीराम के समीप लौटा दें।'[6] इसप्रकार अनेक बार **मन्दोदरी** लंकेश्वर से आग्रहपूर्वक अनुनय-विनय करती रहीं और उसके हित और कल्याण हेतु सच्चे हृदय से प्रार्थना करती रहीं। सत्य यह है कि वाल्मीकि रामायण में **मन्दोदरी** के चरित्र द्वारा हमें एक सहिष्णुनारी की पराकाष्ठा के दर्शन होते हैं, जो पति को पराई स्त्री में

अनुरक्त देखकर भी पतिनिष्ठा को अटल और अक्षुण्ण बनाए रखती हैं तथा स्वधर्म का सच्चाई से पालन करती हैं । वस्तुतः भारतीय समाज के लिए **मन्दोदरी** एक आदर्श पात्र के रूप में उद्धृत हैं, जिनका अनुकरण सर्वसाध्य है ।

उपसंहार –

इसप्रकार वाल्मीकि रामायण में चित्रित उपरोक्त नारी-पात्रों का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि यह महाकाव्य संपूर्ण मानवता की ऐसी अद्भुत सांस्कृतिक धरोहर है, जिसमें मानवीय चरित्रों को विशेषकर स्त्री-पात्रों के सर्वोच्च आदर्शों को बड़ी गहनता से दर्शाया गया है । इनका अनुकरण एवं अनुसरण समाज को श्रेष्ठ और संपूर्ण मानव बनने की प्रेरणा देता है । इस ग्रंथ में स्त्री-पात्रों का चित्रण विभिन्न दृष्टिकोणों से किया गया है । इसमें वर्णित नारी-पात्र भारतीयता के आदर्श से ओतप्रोत हैं । इनके द्वारा केवल चारित्रिक शिक्षा ही नहीं प्राप्त होती, अपितु जीवन मूल्यों, भारतीय संस्कृति के आदर्श गुणों तथा सकारात्मक चिंतन जैसे अमूल्य ज्ञान का भी बोध होता है । आधुनिक भारतीय समाज में जबकि राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिवर्तन इतनी क्षिप्रता से हो रहे हैं, जहां त्याग, सहिष्णुता, स्वाभिमान जैसे आदर्श गुण विलुप्त होते जा रहे हैं, ऐसी परिस्थिति में रामकाव्य के समस्त पात्र हमारा मार्ग प्रशस्त करने में पूर्णतः सहायक हैं । ये पात्र यथार्थ में त्याग और स्वाभिमान की प्रतिमूर्तियां हैं । वस्तुतः रामायण में वर्णित स्त्री-पात्रों के आदर्श-चरित्र भारतीय संस्कृति की जड़े हैं, आज के संदर्भ में उनके गुणों को तथा शाश्वत आदर्शों को अपनाना भावी पीढ़ी के लिए अत्यन्त आवश्यक है । अतः समग्र विवेचनोपरान्त यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि रामायणकालीन इन स्त्री-पात्रों का चारित्रिक पावन संदेश वर्तमान नारी-समाज के लिए बहुत ही व्यावहारिक, महत्वपूर्ण, उपादेय एवं हितकारी है । रामायण में उल्लिखित ये नारी-पात्र न केवल वर्तमान समाज के लिए अनुकरणीय हैं, अपितु भविष्य के भी संदेशवाहक हैं । उनके आदर्श अविस्मरणीय और अनुकरणीय होने के साथ-साथ उनमें निरूपित संस्कृति विशिष्ट एवं मर्यादावादी संस्कृति है, जो सर्वथा ग्रहणीय हैं ।

संदर्भ-ग्रन्थ-सूची –

1- वाल्मीकि रामायण, 2/29/8-9,13 ।
2- वाल्मीकि रामायण, 2/7/29 ।
3- वाल्मीकि रामायण, 2/7/35 एवं 2/8/18 ।
4- वाल्मीकि रामायण, 2/8/10-12 ।
5- वाल्मीकि रामायण, 2/12 /42-44 ।
6- तुलसीदास कृत रामचरितमानस, लंकाकाण्ड, दोहा, 5/3-6 ।